आज के दौर में संगीत को केवल परफार्मेंस तक सीमित करना उचित नहीं : डा. किरण सेठ

लखनऊ : भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल मंचीय प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन-पद्धति और साधना है। आज संगीत को केवल "परफार्मेंस" तक सीमित कर देना उचित नहीं है। इसके पीछे निहित साधना, अनुशासन, चिंतन और जीवन-मूल्यों को समझना आवश्यक है। यह विचार स्पिक मैके के चेयरमैन डा. किरण सेठ ने गुरुवार को भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय के राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आयोजित व्याख्यान में रखे।

भारतीय कला एवं संस्कृति विषय पर हुए व्याख्यान में डा. सेठ ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय संगीत को समझने के लिए अपनी जीवनशैली, खान-पान, रहन-सहन और सोच में भी भारतीयता के मूल तत्वों को आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि "आपको तानसेन बनना है, कानसेन नहीं।"

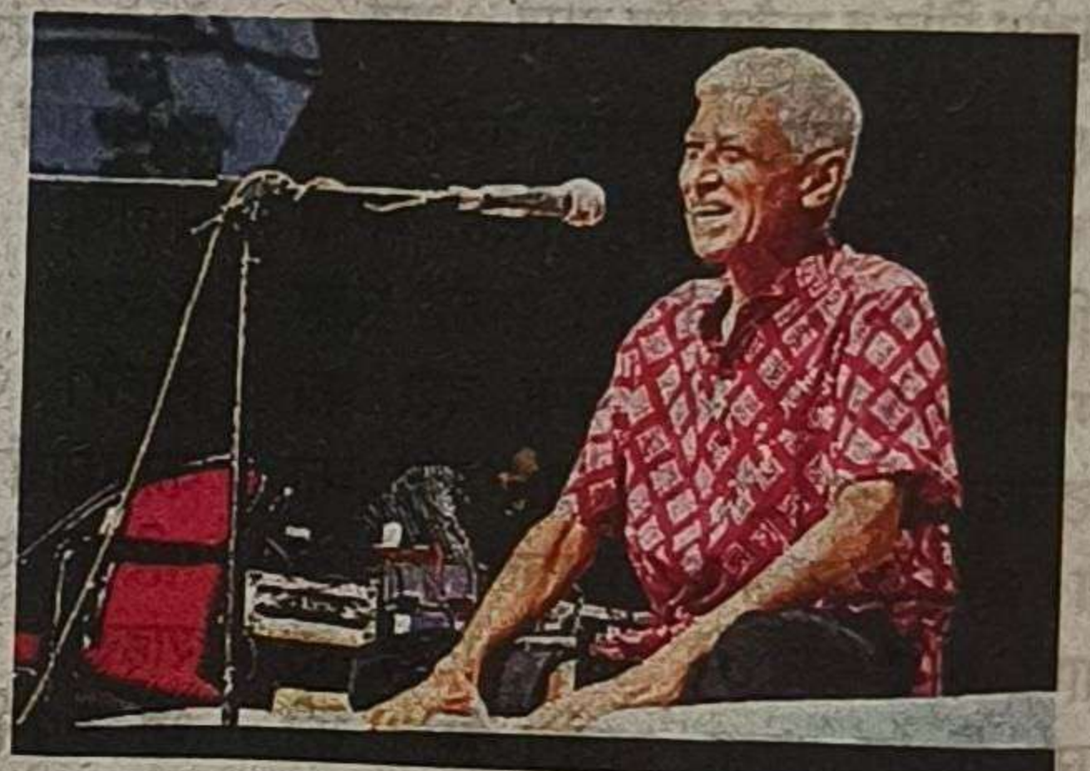

व्याख्यान को संबोधित करते स्पिक मैके के चेयरमैन डा. किरण सेठ • विश्वविद्यालय

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने डा. किरण सेठ का स्मृति-चिह्न एवं अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत व सम्मान किया। कार्यक्रम में प्रो. सृष्टि माथुर, मनोज कुमार मिश्र, प्रो. नृत्य ज्ञानेन्द्र दत्त बाजपेयी, मंजुल पंत सहित अन्य उपस्थित रहे। वि.